ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in April 2025

भारत की युवा पीढ़ी और समकालीन राष्ट्रवाद

शिफा तबस्सूम, शोध छात्रा, राजनीति विज्ञान विभाग दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जिसकी ऐतिहासिक चेतना, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक विविधता विश्व में अद्वितीय है। यहाँ राष्ट्रवाद की अवधारणा केवल राजनीतिक सत्ता–परिवर्तन की प्रक्रिया नहीं रही, बल्कि यह भारतीय समाज के अस्तित्व, एकता और सांस्कृतिक पहचान से गहराई से जुड़ी रही है। भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध में अवश्य निहित थीं, किंतु इसकी प्रकृति केवल औपनिवेशिक विरोध पर आधारित नहीं थी। यह एक ऐसा राष्ट्रवाद था जिसमें आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक गौरव, सामाजिक समरसता और जन–संगठन की विशेष भूमिका थी।

21वीं सदी में भारत जिस ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है, वहाँ राष्ट्रवाद की अवधारणा नये संदर्भों में पुनर्परिभाषित हो रही है। वैश्वीकरण, सूचना क्रांति, तकनीकी नवाचार, अंतरराष्ट्रीय संपर्कों में वृद्धि, पर्यावरणीय संकट, शिक्षा के प्रसार और जनसंख्या संरचना में परिवर्तन ने भारतीय समाज को नई दिशाओं में अग्रसर किया है। इन सबके बीच राष्ट्रवाद अब केवल पारंपरिक प्रतीकों, नारे या भावनात्मक एकजुटता तक सीमित नहीं रह गया है। अब यह नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों, संवैधानिक मूल्यों, लोकतांत्रिक भागीदारी, आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और वैश्विक दृष्टिकोण जैसे अनेक तत्वों से जुड़ चुका है। भारत वर्तमान में जनसंख्या की दृष्टि से विश्व का सबसे युवा देश बनने की दिशा में अग्रसर है। जनगणना तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है, और 2025 तक कार्यशील आयु वर्ग (15–64 वर्ष) की जनसंख्या एक अरब से अधिक हो जाएगी। यह स्थिति भारत को विश्व के सामने एक 'जनांकिकीय शक्ति' (Demographic Power) के रूप में प्रस्तुत करती है। युवाओं की यह विशाल संख्या न केवल भारत की आर्थिक क्षमता का प्रतीक है, बल्कि राष्ट्र की सामाजिक दिशा, सांस्कृतिक प्रवृत्तियों और राजनीतिक परिदृश्य को भी गहराई से प्रभावित कर रही है। युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की ऊर्जा, चेतना और भविष्य का प्रतिनिधि होता है। युवा वह वर्ग है जो परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करता है। वह अतीत की स्मृतियों और सांस्कृतिक विरासत से जुड़ा भी होता है और साथ ही नई तकनीकी, विचारधारात्मक और सामाजिक परिवर्तनों के प्रति सबसे अधिक ग्रहणशील भी होता है। यही कारण है कि किसी भी युग में राष्ट्रवाद की अवधारणा को जीवंत बनाए रखने में युवा पीढ़ी की भूमिका निर्णायक मानी गई है। स्वतंत्रता आंदोलन में जहाँ युवाओं ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध की चिंगारी को जन–आंदोलन में बदला, वहीं आज का युवा राष्ट्रवाद को डिजिटल विमर्श, नीति–निर्माण, सामाजिक आंदोलनों और अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में नई दिशा दे रहा है। समकालीन युग में राष्ट्रवाद की परिभाषा में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। पारंपरिक राष्ट्रवाद जहाँ राष्ट्र को मुख्यतः एक सांस्कृतिक और भौगोलिक इकाई के रूप में देखता था, वहीं आधुनिक राष्ट्रवाद में नागरिकता, संवैधानिक मूल्य, लोकतांत्रिक सहभागिता और वैश्विक साझेदारी जैसे आयाम जुड़ गए हैं। युवा वर्ग इन परिवर्तनों को न केवल स्वीकार कर रहा है, बल्कि इनका सक्रिय वाहक बनकर उभरा है। वह सोशल मीडिया, तकनीकी उपकरणों और विभिन्न मंचों के माध्यम से नये विमर्श खड़े कर रहा है, नीतियों को चुनौती दे रहा है और कभी–कभी आंदोलनों के माध्यम से दिशा भी निर्धारित कर रहा है।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि समकालीन भारत में राष्ट्रवाद की परिधि में अनेक प्रकार की विचारधाराएँ सक्रिय हैं। एक ओर सांस्कृतिक राष्ट्रवाद है, जो भारतीय सभ्यता, धर्म और परंपराओं को केंद्र में रखकर राष्ट्र की परिकल्पना करता है। दूसरी ओर संवैधानिक राष्ट्रवाद है, जो संविधान, लोकतंत्र, समानता, धर्मनिरपेक्षता और नागरिक अधिकारों को मूल में रखता है। इसके अलावा नागरिक राष्ट्रवाद और वैश्विक नागरिकता के विचार भी युवाओं के बीच प्रभावशाली हो रहे हैं। इन विविध प्रवाहों के बीच युवा पीढ़ी केवल अनुयायी नहीं, बल्कि सक्रिय रूप से विचार–निर्माण में भाग ले रही है। वह नये प्रश्न उठा रही है, विमर्श को चुनौती दे रही है और राष्ट्रवाद की परंपरागत परिभाषाओं में अपना दृष्टिकोण जोड़ रही है।

भारत की युवा पीढ़ी की एक विशेषता यह है कि वह न तो पूर्णतः परंपरा से कटकर आधुनिकता को अपनाती है और न ही अतीत में ही उलझी रहती है। वह दोनों के बीच संतुलन खोजती है। एक ओर वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों पर गर्व करती है, तो दूसरी ओर वह आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों, व्यक्तिगत

स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वैश्विक साझेदारी को भी महत्व देती है। इस दृष्टि से युवा राष्ट्रवाद न तो केवल अतीतमुखी है और न ही पश्चिमी प्रतिमानों की नकल मात्रय बल्कि यह एक ऐसा राष्ट्रवाद है जो भारतीय समाज की विशिष्टताओं को बनाए रखते हुए आधुनिक समय की जटिलताओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल क्रांति ने राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति को नया आयाम दिया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने युवाओं को न केवल सूचना तक पहुँच दी है, बल्कि उन्हें अपने विचारों को व्यापक स्तर पर प्रसारित करने की शक्ति भी दी है। अब राष्ट्रवाद केवल पुस्तकों, सभाओं या राजनीतिक दलों तक सीमित नहीं हैय यह ट्विटर के ट्रेंड्स, यूट्यूब बहसों, इंस्टाग्राम अभियानों और ऑनलाइन हस्ताक्षर आंदोलनों के रूप में भी सामने आ रहा है। इस डिजिटल राष्ट्रवाद में युवाओं की भूमिका सबसे अग्रणी है। वे न केवल विचार रखते हैं, बल्कि नीति और जनमत को प्रभावित भी करते हैं।

प्रस्तावना के इस भाग में यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि राष्ट्रवाद की समकालीन परिभाषा स्थिर नहीं है, बल्कि यह सतत परिवर्तनशील प्रक्रिया है। इसमें सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ, राजनीतिक परिदृश्य, वैश्विक घटनाएँ और तकनीकी विकास सभी योगदान करते हैं। इस परिवर्तनशील प्रक्रिया में युवा पीढ़ी वह वर्ग है जो सबसे तेजी से प्रतिक्रिया करता है और नई परिस्थितियों में सबसे पहले ढलता है। यही कारण है कि आज के समय में जब भी राष्ट्रवाद की चर्चा होती है, तो उसके केंद्र में युवाओं को रखा जाता है।

इस शोध–पत्र में इसी केंद्रीय प्रश्न का गहन विश्लेषण किया जाएगा, कि भारत की युवा पीढ़ी और समकालीन राष्ट्रवाद के बीच कैसा संबंध स्थापित हो रहा है? युवा किस प्रकार राष्ट्रवाद को आत्मसात कर रहे हैं, उसे नए रूप में गढ़ रहे हैं और किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं? साथ ही यह भी समझने का प्रयास होगा कि युवा वर्ग भविष्य के भारत के राष्ट्रवाद को किस दिशा में ले जा सकता है।

मुख्य शब्द :– युवा पीढ़ी, राष्ट्रवाद, वैश्वीकरण, डिजिटल सक्रियता, संवैधानिक मूल्य, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राजनीतिक भागीदारी, सामाजिक न्याय, ग्लोकल दृष्टिकोण, 21वीं सदी का भारत

भारतीय राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक विकास और युवा चेतना

भारतीय राष्ट्रवाद का विकास एक दीर्घ ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें युवाओं की भूमिका प्रारंभ से ही निर्णायक रही है। भारतीय राष्ट्रवाद की प्रकृति पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न रही है। यूरोप में राष्ट्रवाद औद्योगिकीकरण, राजनीतिक केंद्रीकरण और आधुनिक राष्ट्र–राज्यों की अवधारणा से उत्पन्न हुआ, जबकि भारत में यह औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध एक सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिरोध और आत्मनिर्भरता की भावना से विकसित हुआ। इस प्रक्रिया में युवा पीढ़ी ने न केवल आंदोलन की ऊर्जा प्रदान की, बल्कि विचारधारा, संगठन और नेतृत्व में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई।

औपनिवेशिक शासन और राष्ट्रीय चेतना का उदय

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जब भारत पर ब्रिटिश साम्राज्य का नियंत्रण सुदृढ़ होने लगा, तब भारतीय समाज में पारंपरिक संरचनाएँ धीरे–धीरे टूटने लगीं। ब्रिटिश शासन ने जहाँ एक ओर आधुनिक शिक्षा प्रणाली, प्रशासनिक केंद्रीकरण और संचार साधनों का प्रसार किया, वहीं दूसरी ओर उसने आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक दमन और राजनीतिक अधिकारों के हनन की नीतियाँ अपनाई। इन नीतियों ने एक नई सामाजिक चेतना को जन्म दिया, विशेषकर शिक्षित मध्यमवर्ग और युवाओं में।

19वीं शताब्दी के मध्य में स्थापित विश्वविद्यालयों कृ जैसे कलकत्ता विश्वविद्यालय (1857), मद्रास विश्वविद्यालय और बॉम्बे विश्वविद्यालय कृ ने एक नए शिक्षित युवा वर्ग को जन्म दिया, जो पारंपरिक समाज और आधुनिक औपनिवेशिक शासन दोनों से परिचित था। इस वर्ग ने धीरे–धीरे ब्रिटिश नीतियों की आलोचना शुरू की और राजनीतिक अधिकारों की माँग उठाई। इस काल को राष्ट्रवाद के प्रारंभिक चरण के रूप में देखा जा सकता है।

प्रारंभिक राष्ट्रवादी आंदोलन में युवाओं की भागीदारी

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, जिसने राजनीतिक अधिकारों की माँग को संगठित रूप दिया। यद्यपि प्रारंभिक कांग्रेस आंदोलन की नेतृत्वकारी भूमिका वरिष्ठ शिक्षित वर्ग के हाथों में थी, परंतु इसमें युवा वर्ग ने संगठनात्मक और विचारात्मक स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाई। 1905 में बंगाल विभाजन के बाद स्वदेशी आंदोलन ने युवाओं को प्रत्यक्ष राजनीतिक संघर्ष में उतारा। स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों की स्थापना और ब्रिटिश शासन के विरोध में व्यापक भागीदारी की। युवाओं ने न केवल आंदोलन में भाग लिया, बल्कि उन्होंने

सांस्कृतिक पुनर्जागरण के माध्यम से भी राष्ट्रवाद को बल दिया। साहित्य, नाटक, गीत, अखबार और पत्रिकाएँ इस समय के प्रमुख माध्यम बने। युवा कवियों और लेखकों ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत साहित्य रचा, जिससे आम जनता में भी राष्ट्रवाद की भावना प्रबल हुई।

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और युवाओं का नेतृत्व

20वीं सदी के प्रारंभ में भारतीय राष्ट्रवाद में एक नई धारा उभरी कृ क्रांतिकारी राष्ट्रवाद। इस धारा में युवाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रही। लाला हरदयाल, वीर सावरकर, बटुकेश्वर दत्त, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकुल्ला खाँ, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद जैसे युवा क्रांतिकारियों ने ब्रिटिश शासन को सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से चुनौती दी। 1913 में अमेरिका में 'गदर पार्टी' की स्थापना प्रवासी भारतीय युवाओं द्वारा की गई थी। इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सशस्त्र क्रांति की तैयारी करना था। भारत में 'अनुशीलन समिति' और 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' जैसे संगठनों में युवाओं ने संगठित होकर क्रांतिकारी गतिविधियाँ चलाईं। इन युवाओं का राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं थाय वे सामाजिक समानता, शोषण के अंत और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित भारत की कल्पना करते थे। भगत सिंह इस युवा राष्ट्रवादी चेतना के प्रतीक बनकर उभरे। उन्होंने ब्रिटिश सत्ता को केवल राजनीतिक शासन के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे आर्थिक–सांस्कृतिक शोषण की प्रणाली के रूप में विश्लेषित किया। उनका विचार था कि असली स्वतंत्रता तभी संभव है जब सामाजिक ढाँचों में भी परिवर्तन हो। उनकी वैचारिक गहराई, क्रांतिकारी उत्साह और संगठनात्मक क्षमता ने युवा वर्ग को व्यापक रूप से प्रेरित किया।

गांधी युग और युवाओं का अहिंसक प्रतिरोध

1915 में महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के बाद राष्ट्रवाद की दिशा में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। गांधीजी ने आंदोलन को जनांदोलन में रूपांतरित किया और सत्याग्रह, असहयोग तथा सविनय अवज्ञा जैसे अहिंसक साधनों को अपनाया। इस काल में युवाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही। 1920 के असहयोग आंदोलन में हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार कर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों में प्रवेश लिया। 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने ब्रिटिश शासन को हिला दिया। इस दौरान विश्वविद्यालयों में छात्र संगठन राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार के केंद्र बने। युवाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया, जेल गए और कई बार लाठी–गोली भी झेली। गांधी युग में युवाओं की राष्ट्रवादी चेतना दो स्तरों पर कार्यरत थी कृ एक ओर उन्होंने प्रत्यक्ष राजनीतिक आंदोलन में भाग लेकर औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी, वहीं दूसरी ओर उन्होंने ग्रामीण पुनर्निर्माण, शिक्षा, स्वच्छता और स्वावलंबन के कार्यक्रमों में भी भाग लिया। इससे राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक संघर्ष न रहकर सामाजिक पुनर्गठन की प्रक्रिया बन गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रवाद का रूपांतरण और युवाओं की भूमिका

1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद की प्रकृति में बड़ा परिवर्तन आया। अब राष्ट्रवाद का लक्ष्य विदेशी शासन से मुक्ति न रहकर राष्ट्रीय एकता, अखंडता, विकास और लोकतंत्र की स्थापना की ओर केंद्रित हुआ। युवाओं की भूमिका भी आंदोलनकारी से राष्ट्रनिर्माता की हो गई। स्वतंत्र भारत में संविधान निर्माण, सार्वभौमिक मताधिकार, लोकतांत्रिक संस्थाओं की स्थापना और सामाजिक सुधारों में युवाओं ने सक्रिय भागीदारी की। पंडित नेहरू के नेतृत्व में पंचवर्षीय योजनाओं, औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में युवाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में शामिल किया गया। नेहरू युवा केंद्र, एन.एस.एस. (राष्ट्रीय सेवा योजना), एन.सी.सी. (राष्ट्रीय कैडेट कोर) जैसी संस्थाओं ने युवाओं को सामाजिक सेवा, रक्षा और राष्ट्रीय एकता के कार्यों में जोड़ा।

1991 के बाद का दौर, वैश्वीकरण और राष्ट्रवाद का नया रूप

1991 में आर्थिक उदारीकरण के बाद भारतीय राष्ट्रवाद के स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। एक ओर उपभोक्तावाद, तकनीकी क्रांति, मीडिया विस्तार और वैश्विक संपर्कों ने युवाओं के जीवन दृ ष्टिकोण को बदलाय दूसरी ओर सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रवृत्तियाँ भी उभरीं। अब राष्ट्रवाद केवल औपनिवेशिक प्रतिरोध का पर्याय नहीं रह गया, बल्कि यह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भारत की स्थिति, तकनीकी नेतृत्व, आर्थिक प्रगति और सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा से जुड़ने लगा। युवाओं के लिए राष्ट्रवाद अब अतीत की स्मृतियों से आगे बढ़कर भविष्य की आकांक्षाओं से जुड़ गया। उन्होंने शिक्षा, तकनीकी नवाचार, उद्यमिता और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भागीदारी के माध्यम से भारत को सशक्त राष्ट्र के रूप में उभारने में योगदान दिया। इसी काल में भारतीय युवाओं की वैश्विक उपस्थिति भी बढ़ी कृ चाहे वह आईटी क्षेत्र में

हो, अकादमिक जगत में या स्टार्टअप संस्कृति में।

समकालीन राष्ट्रवाद और युवा पीढ़ी की भूमिका

21वीं सदी में राष्ट्रवाद केवल एक स्थिर राजनीतिक विचार नहीं रहा, बल्कि यह एक जीवंत, बहुआयामी और निरंतर परिवर्तित होता विमर्श बन चुका है। वैश्वीकरण, डिजिटलीकरण, सामाजिक विविधता, आर्थिक परिवर्तन, अंतरराष्ट्रीय संबंधों में बदलाव और वैचारिक बहसों ने राष्ट्रवाद को एक जटिल लेकिन सशक्त प्रक्रिया में बदल दिया है। इस समकालीन राष्ट्रवाद में भारत की युवा पीढ़ी की भूमिका सबसे अधिक सक्रिय, निर्णायक और प्रभावशाली हो गई है। युवा वर्ग अब केवल राष्ट्रवाद का श्रोता या अनुयायी नहीं रहाय वह इसके निर्माणकर्ता, विचार निर्माता और नीतिगत दिशा देने वाले के रूप में उभरा है। वह अपने विचारों को केवल पारंपरिक मंचों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि डिजिटल स्पेस, सिविल सोसायटी, आंदोलन, राजनीति, कला, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय संवादों के माध्यम से राष्ट्रवाद को प्रभावित करता है।

डिजिटल युग में राष्ट्रवाद का नया रूप और युवाओं की भूमिका

21वीं सदी की सबसे बड़ी क्रांति डिजिटल तकनीक और इंटरनेट की पहुँच में वृद्धि है। भारत में 80 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं, जिनमें सबसे बड़ा वर्ग युवाओं का है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कृ ट्विटर, इंस्टाग्राम, फेसबुक, यूट्यूब, टेलीग्राम और अन्य कृ राष्ट्रवाद के विमर्श के प्रमुख मंच बन चुके हैं। युवा अब विचारों को गुप्त रखने के बजाय खुले रूप में व्यक्त करते हैं। वे नीतियों पर टिप्पणी करते हैं, शासन की आलोचना करते हैं, वैचारिक समूह बनाते हैं और जनमत को प्रभावित करते हैं। डिजिटल राष्ट्रवाद की यह प्रवृत्ति पारंपरिक राष्ट्रवादी आंदोलनों से भिन्न है क्योंकि इसमें संगठन की गति तीव्र है, संदेश का प्रसार तात्कालिक है और भागीदारी अधिक विकेंद्रीकृत है। उदाहरण के लिए, 2019 में नागरिकता संशोधन कानून (CAA) के विरोध में हुए आंदोलनों में विश्वविद्यालयों के छात्रों और युवा संगठनों की भूमिका अभूतपूर्व थी। सोशल मीडिया पर हैशटैग (CAAProtests, ShaheenBagh आदि) लाखों लोगों तक पहुँचे। युवाओं ने मीम्स, वीडियो, लाइव स्ट्रीमिंग, ऑनलाइन पत्राचार और लेखों के माध्यम से वैचारिक विमर्श को पूरे देश में फैला दिया। इसी तरह, 2020–21 में हुए किसान आंदोलन में भी शहरी और ग्रामीण युवाओं ने सोशल मीडिया को संगठन और अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने के लिए एक सशक्त हथियार के रूप में प्रयोग किया। युवाओं द्वारा संचालित यह डिजिटल विमर्श केवल राजनीतिक विरोध तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने शिक्षा में सुधार, लैंगिक समानता, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संरक्षण, भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज और लोकतांत्रिक अधिकारों के संरक्षण के लिए भी डिजिटल आंदोलन चलाए। यह दर्शाता है कि समकालीन राष्ट्रवाद युवाओं के लिए केवल भावनात्मक विषय नहीं है, बल्कि वह इसे अपने नागरिक अधिकारों, भविष्य की संभावनाओं और सामाजिक न्याय से जोड़ते हैं।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद बनाम संवैधानिक राष्ट्रवाद, युवा विमर्श की दिशा

समकालीन भारत में राष्ट्रवाद दो प्रमुख धाराओं में प्रकट होता है –

1. सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जो भारतीय सभ्यता, धर्म, परंपरा और सांस्कृतिक एकता को राष्ट्र की परिभाषा का आधार मानता है।
2. संवैधानिक राष्ट्रवाद, जो भारतीय संविधान के सिद्धांतों कृ समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और मानवाधिकार कृ को राष्ट्र की अवधारणा का केंद्र मानता है।

युवा पीढ़ी इन दोनों धाराओं के बीच सक्रिय विमर्श में लगी हुई है। विश्वविद्यालयों में होने वाली बहसें, छात्र संगठनों की गतिविधियाँ, साहित्यिक व सांस्कृतिक आयोजन और सोशल मीडिया पर वैचारिक बहसें इसी का प्रतीक हैं। कुछ युवा समूह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को अपनी पहचान और गौरव का आधार मानते हुए भारतीय परंपराओं के पुनर्जागरण पर बल देते हैं। वे भारतीय इतिहास, धार्मिक परंपराओं और सांस्कृतिक प्रतीकों के संरक्षण को राष्ट्रवाद का मूल मानते हैं। दूसरी ओर, एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है जो संवैधानिक मूल्यों को सर्वोपरि मानते हुए सामाजिक समानता, मानवाधिकार और धर्मनिरपेक्षता की रक्षा को राष्ट्रवाद का केंद्र मानता है। महत्वपूर्ण यह है कि दोनों धाराओं में युवाओं की भागीदारी केवल नारेबाजी या अनुसरण तक सीमित नहीं हैय वे विचार रखते हैं, बहस करते हैं और कई बार वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। यह भारत में वैचारिक विविधता और लोकतांत्रिक चेतना का संकेत है।

राजनीतिक भागीदारी में युवाओं की भूमिका

भारत में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी पिछले दो दशकों में उल्लेखनीय रूप से बढ़ी है। एक ओर जहाँ युवा वर्ग बड़े पैमाने पर चुनावों में मतदाता के रूप में सक्रिय हुआ है, वहीं दूसरी ओर वे

नीति–निर्माण, नेतृत्व और आंदोलनों में भी भाग ले रहे हैं। भारत के कुल मतदाताओं में लगभग 45 प्रतिशत युवा मतदाता हैं। 18–29 वर्ष के युवाओं का मतदान प्रतिशत बढ़ा है, जिससे राजनीतिक दलों ने युवाओं को केंद्र में रखकर नीतियाँ बनानी शुरू की हैं। कई राज्यों में युवा विधायक, मंत्री और स्थानीय निकायों में प्रतिनिधि बनकर उभरे हैं। इसके अतिरिक्त, विश्वविद्यालयों में छात्र राजनीति ने भी राष्ट्रवादी विमर्श को आकार दिया है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (JNU), दिल्ली विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) और अन्य प्रमुख संस्थानों में छात्र संगठनों ने नागरिक अधिकार, सामाजिक समानता, सांस्कृतिक प्रश्नों और नीतिगत सुधारों पर आंदोलन किए। यह आंदोलन केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित नहीं रहे, बल्कि उन्होंने राष्ट्रीय विमर्श को प्रभावित किया।

आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों के साथ राष्ट्रवाद का संबंध

समकालीन युवाओं के लिए राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक विचार नहीं हैय वह उनके दैनिक जीवन, भविष्य की संभावनाओं और सामाजिक परिवेश से गहराई से जुड़ा है।

(क) शिक्षा और रोजगारः

भारत में बड़ी संख्या में युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, परंतु गुणवत्तापूर्ण रोजगार की कमी एक गंभीर समस्या बनी हुई है। युवा अब राष्ट्रवाद को इस दृष्टिकोण से भी देखते हैं कि क्या राष्ट्र उन्हें समान अवसर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नवाचार के लिए अनुकूल वातावरण और गरिमामय रोजगार उपलब्ध कराता है या नहीं।

(ख) सामाजिक समानता और न्यायः

जाति, वर्ग, धर्म और लिंग आधारित असमानताओं के विरुद्ध युवाओं ने कई आंदोलन चलाए हैं। वे सामाजिक न्याय को राष्ट्रवाद का एक महत्वपूर्ण घटक मानते हैं। उनका मानना है कि जब तक राष्ट्र के सभी नागरिकों को समान अवसर और सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक राष्ट्रवाद अधूरा रहेगा।

(ग) पर्यावरणीय चेतनाः

युवा पीढ़ी जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय संकटों को गंभीरता से लेती है। भारत में कई युवा संगठनों ने जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और वनों की कटाई के खिलाफ आंदोलन किए हैं। वे मानते हैं कि एक सशक्त राष्ट्र वही है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और स्वच्छ पर्यावरण छोड़ता है।

वैश्विक दृष्टिकोण और 'ग्लोकल' पहचान

आज का युवा न केवल भारतीय है, बल्कि एक वैश्विक नागरिक भी है। इंटरनेट, यात्रा, शिक्षा और रोजगार के अवसरों के माध्यम से भारतीय युवा वैश्विक समाज से गहराई से जुड़ गया है। इस कारण वह राष्ट्रवाद को केवल सीमित भौगोलिक दृष्टि से नहीं देखता। वह अपनी 'स्थानीय पहचान' (Local Identity) को सुरक्षित रखते हुए 'वैश्विक दृष्टि' (Global Vision) अपनाता है कृ इसे ही "Glocal Identity" कहा जाता है। इस दृष्टि से युवाओं का राष्ट्रवाद परंपरागत सीमाओं से परे जाकर अंतरराष्ट्रीय सहयोग, सांस्कृतिक संवाद और वैश्विक न्याय के मुद्दों को भी शामिल करता है।

युवाओं की सक्रियता की चुनौतियाँ

समकालीन राष्ट्रवाद में युवाओं की सक्रिय भूमिका के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं –

- फेक न्यूज और सूचना का ध्रुवीकरणः डिजिटल माध्यमों पर झूठी सूचनाओं और अफवाहों के प्रसार ने राष्ट्रवादी विमर्श को कई बार विभाजनकारी बनाया है।
- वैचारिक ध्रुवीकरणः सोशल मीडिया ने वैचारिक खेमेबंदी को बढ़ाया है, जिससे तर्कसंगत बहसों की जगह भावनात्मक टकराव हावी होने लगा है।
- राजनीतिक अवसरवादः कई बार राजनीतिक दल युवाओं की राष्ट्रवादी भावनाओं का उपयोग अपने चुनावी हितों के लिए करते हैं।
- आर्थिक असमानताः संसाधनों की असमान पहुँच से कई युवा राष्ट्रवाद की प्रक्रिया से बाहर भी महसूस करते हैं।

इन चुनौतियों के बावजूद, युवाओं की भूमिका राष्ट्रवाद के निर्माण में सकारात्मक और निर्णायक बनी हुई है।

निष्कर्ष

भारत की युवा पीढ़ी और समकालीन राष्ट्रवाद के बीच संबंध को यदि गहराई से देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि आज का राष्ट्रवाद पारंपरिक राजनीतिक नारों या प्रतीकों का मात्र पुनरावृत्ति नहीं

है, बल्कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और डिजिटल परिदृश्यों के बीच निर्मित एक जटिल किन्तु सशक्त विमर्श है। इस विमर्श में युवा पीढ़ी केवल एक निष्क्रिय उपभोक्ता नहीं, बल्कि एक सक्रिय भागीदार, विचार निर्माता और परिवर्तन का प्रेरक तत्व बनकर उभरी है। भारतीय राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक यात्रा में युवाओं की भूमिका सदा से केंद्रीय रही है। औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध में शिक्षित युवाओं ने विचारधारा और संगठन की नींव रखी। क्रांतिकारी आंदोलनों में युवा नेताओं ने ब्रिटिश साम्राज्य को खुली चुनौती दी। गांधी युग में उन्होंने अहिंसक प्रतिरोध के माध्यम से आंदोलन को जन–आधारित बनाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राष्ट्रनिर्माण की दिशा में युवाओं ने पंचवर्षीय योजनाओं, औद्योगिकीकरण, वैज्ञानिक चेतना और सामाजिक एकता में योगदान दिया। 1991 के बाद के वैश्वीकरण के युग में युवाओं ने आर्थिक नवाचार, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक पुनरुत्थान में सक्रिय भूमिका निभाई। 21वीं सदी के वर्तमान परिदृश्य में राष्ट्रवाद की परिभाषा और व्यवहार में भारी परिवर्तन आया है। वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाओं को सापेक्ष बना दिया है, डिजिटल तकनीक ने विचारों के प्रवाह को तात्कालिक बना दिया है, और सामाजिक विविधता ने राष्ट्र की अवधारणा को अधिक समावेशी और बहुस्तरीय बनाया है। इन परिवर्तनों में युवा वर्ग ने न केवल अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है, बल्कि राष्ट्रवाद को नए रूप में गढ़ा है।

पहला, युवाओं ने राष्ट्रवाद को डिजिटल विमर्श के केंद्र में लाकर पारंपरिक राजनीतिक विमर्श को चुनौती दी है। अब राष्ट्रवाद केवल संसद, दलों या अखबारों तक सीमित नहीं हैय यह ट्विटर के ट्रेंड्स, इंस्टाग्राम अभियानों, यूट्यूब बहसों और ऑनलाइन जनआंदोलनों का हिस्सा बन चुका है। नागरिकता संशोधन कानून (CAA) विरोधी आंदोलन, किसानों के आंदोलन, जलवायु परिवर्तन के लिए युवाओं द्वारा चलाए गए अभियानों ने दिखाया कि डिजिटल युग में युवा किस प्रकार राष्ट्रीय नीतियों को प्रभावित कर सकते हैं।

दूसरा, युवा वर्ग ने राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक और संवैधानिक विमर्शों के बीच एक जीवंत संवाद में बदल दिया है। एक ओर वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं को सम्मान और गौरव का विषय मानता है, तो दूसरी ओर वह समानता, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और संवैधानिक अधिकारों को भी उतनी ही महत्ता देता है। इस प्रकार का द्वंद्वात्मक विमर्श भारतीय राष्ट्रवाद को समृद्ध और बहुलतावादी बनाता है।

तीसरा, युवा वर्ग राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक विचार के रूप में नहीं, बल्कि नागरिक अधिकारों और भविष्य की संभावनाओं के साथ जोड़ता है। उनके लिए राष्ट्रवाद का अर्थ केवल नारे लगाना या प्रतीकों का प्रदर्शन नहीं हैय बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समान अवसर, रोजगार की सुरक्षा, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक न्याय भी राष्ट्रवाद के अभिन्न अंग हैं। युवा यह प्रश्न उठाते हैं कि एक सशक्त राष्ट्र किस प्रकार अपने नागरिकों के जीवन को बेहतर बनाता है, न कि केवल भौगोलिक सीमाओं की रक्षा करता है।

चौथा, समकालीन राष्ट्रवाद में युवाओं की भागीदारी ने भारत को एक वैश्विक नागरिक समाज के रूप में प्रस्तुत किया है। आज का भारतीय युवा केवल अपने स्थानीय समाज तक सीमित नहीं हैय वह वैश्विक समस्याओं कृ जैसे जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार, तकनीकी नवाचार, अंतरराष्ट्रीय सहयोग कृ में भी अपनी भूमिका देखता है। इस प्रकार युवाओं ने राष्ट्रवाद को एक "ग्लोकल" (Global + Local) दृष्टिकोण से परिभाषित किया है।

नीतिगत सुझाव और भविष्य की दिशा

शिक्षा प्रणाली में वैचारिक स्वतंत्रता और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहनः

यदि युवा वर्ग को राष्ट्रवाद को समझना और विकसित करना है, तो शिक्षा प्रणाली को रटंत व्यवस्था से बाहर आकर वैचारिक स्वतंत्रता, तार्किक बहस और बहुलतावादी दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए। विश्वविद्यालय और विद्यालय केवल ज्ञान के केंद्र न होकर विचारों के आदान–प्रदान के मंच बनें।

डिजिटल साक्षरता और मीडिया साक्षरता का प्रसारः

आज के समय में राष्ट्रवाद का बड़ा हिस्सा डिजिटल माध्यमों पर निर्मित होता है। अतः युवाओं को फेक न्यूज से निपटने, तथ्यों की जाँच करने और वैचारिक संतुलन बनाए रखने के लिए प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है।

राजनीतिक नेतृत्व में युवाओं की वास्तविक भागीदारीः

राजनीतिक दलों को युवाओं को केवल प्रतीकात्मक भूमिका न देकर वास्तविक नीतिगत निर्णयों

में शामिल करना चाहिए। युवा नेतृत्व को बढ़ावा देने से राष्ट्रवाद में नई ऊर्जा और विचार आएंगे।

आर्थिक और सामाजिक अवसरों का विस्तारः

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, समान रोजगार अवसर और सामाजिक न्याय ही युवाओं की राष्ट्रवादी चेतना को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। सरकार और समाज को इन बुनियादी अपेक्षाओं को प्राथमिकता देनी होगी।

वैश्विक संवाद में युवाओं की भूमिका को सशक्त करनाः

भारतीय युवाओं को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अधिक अवसर देने चाहिए, ताकि वे वैश्विक विमर्शों में भारतीय राष्ट्रवाद की आधुनिक, प्रगतिशील और समावेशी छवि प्रस्तुत कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य, धर्मपाल. "भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास", नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2012.
2. शेखर, सुधीर. "भारतीय युवा और बदलता समाज", नई दिल्लीः साहित्य भवन, 2018.
3. गुप्ता, जगदीश. "राष्ट्रवाद और भारतीय समाज", वाराणसीः भारती प्रकाशन, 2016.
4- Bose, Sugata. **"Modern India and Nationalism"**, New Delhi: Oxford University Press, 2011.
5- Chatterjee, Partha. **"Nationalist Thought and the Colonial World"**, Minneapolis: University of Minnesota Press, 1986.
6- Kaviraj, Sudipta. **"The Imaginary Institution of India: Politics and Ideas"**, Ranikhet: Permanent Black, 2010.
7. Tripathi, Ram Sharan. "भारतीय राष्ट्रवाद के सांस्कृतिक आयाम", प्रयागराजः लोकभारती प्रकाशन, 2014.
8- Deshpande, Satish. **"Contemporary India: A Sociological View"**, New Delhi: Penguin India, 2003.
9- Jaffrelot, Christophe. **"Religion, Caste and Politics in India"**, London: Hurst & Co., 2011.
10- Kumar, Sanjay. **"Indian Youth and Politics in 21st Century"**, New Delhi: Routledge India, 2019.